# पतञ्जलि विश्वविद्यालय, ( हरिद्वार )

# पाठ्यक्रम - M.A. - दर्शन

## वर्ष- 2024-2025

# पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

## पाठ्यक्रम- एम.ए.- (दर्शनशास्त्र)
## प्रथम एवं द्वितीय वर्ष
## कुल सामान्य नियम एवं प्रस्तावना

- प्रस्तुत पाठ्यक्रम दो वर्ष का होगा, जिसमें चार सत्र होगें।
- प्रत्येक सत्र में चार प्रश्नपत्र होंगे, किन्तु अन्तिम सत्र में पाँचवाँ प्रश्नपत्र वैकल्पिक रूप से लघु शोध प्रबन्ध/निबन्ध परक होगा।
- प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का होगा।
- प्रत्येक पत्र में 30 अंकों की आन्तरिक एवं 70 अंको की बाह्य परीक्षा होगी।
- परीक्षा का माध्यम इच्छानुसार हिन्दी/संस्कृत/अंग्रेजी होगा।
- प्रत्येक परीक्षा का निर्धारित समय 3 घण्टे होगा।
- परीक्षा में 45% अंक प्राप्त करने वाले छात्र को ही उत्तीर्ण माना जायेगा।

## शिक्षण और मूल्यांकन की योजना

# UNIVERSITY OF PATANJALI

## MA (DARSHAN)

## 2024-25

### Semester - I

| Sl.No. | Course Code | Course Title | Lecture per week | | | Total Credit | Evaluation Scheme | | | Total |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | Sessional | | External | |
| | | | L | T | P | | CT | TA | SEE | |
| 1 | MD-CT-101 | वैदिक साहित्यम् एवं सव्यासभाष्ययम् योगदर्शनम् (समाधिपादः) सब्रह्ममुनिभाष्यम् सांख्यदर्शनम् (प्रथमाध्यायः) | 4 | 1 | 0 | 5 | 20 | 10 | 70 | 100 |
| 2 | MD-CT-102 | सवात्स्यायनभाष्यम् न्यायदर्शनम् (प्रथम एवं पंचमाध्यायौ) सप्रशस्तपादभाष्यम् वैशैषिकदर्शनम् (प्रथम एवं द्वितीयाध्यायौ) | 4 | 1 | 0 | 5 | 20 | 10 | 70 | 100 |
| 3 | MD-CT-103 | सब्रह्ममुनिभाष्यम् वेदांतदर्शनम् (प्रथमाध्यायः) शाबरभाष्यम् मीमांसादर्शनम् (तर्कपादः) | 4 | 1 | 0 | 5 | 20 | 10 | 70 | 100 |
| 4 | MD-CT-104 | सर्वदर्शनसंग्रहः | 4 | 1 | 0 | 5 | 20 | 10 | 70 | 100 |
| 5 | MD-AEC01-105 | Basic of Computer Application | 0 | 0 | 4 | 2 | | | | |
| | | | | TOTAL | | 22 | | Total | | 400 |

### Semester - II

| Sl.No. | Course Code | Course Title | Lecture per week | | | Total Credit | Evaluation Scheme | | | Total |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | Sessional | | External | |
| | | | L | T | P | | CT | TA | SEE | |
| 1 | MD-CT-201 | सव्यासभाष्ययम् योगदर्शनम् (साधनपादः) सब्रह्ममुनिभाष्यम् सांख्यदर्शनम् (द्वितीयाध्यायः) | 4 | 1 | 0 | 5 | 20 | 10 | 70 | 100 |
| 2 | MD-CT-202 | सवात्स्यायनभाष्यम् न्यायदर्शनम् (द्वितीयाध्यायः) सप्रशस्तपादभाष्यम् वैशैषिकदर्शनम् (तृतीय एवं चतुर्थाध्यायौ) | 4 | 1 | 0 | 5 | 20 | 10 | 70 | 100 |
| 3 | MD-CT-203 | सब्रह्ममुनिभाष्यम् वेदांतदर्शनम् (द्वितीयाध्यायः) ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका | 4 | 1 | 0 | 5 | 20 | 10 | 70 | 100 |
| 4 | MD-CT-204 | पाश्चात्यदर्शनम् | 4 | 1 | 0 | 5 | 20 | 10 | 70 | 100 |
| 5 | MD-SEC01-205 | Communication Technology | 1 | 0 | 2 | 2 | | | | |
| | | | | TOTAL | | 22 | | Total | | 400 |

### Semester - III

| Sl.No. | Course Code | Course Title | Lecture per week | | | Total Credit | Evaluation Scheme | | | Total |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | Sessional | | External | |
| | | | L | T | P | | CT | TA | SEE | |
| 1 | MD-CT-301 | सव्यासभाष्ययम् योगदर्शनम् (विभूतिपादः) सब्रह्ममुनिभाष्यम् सांख्यदर्शनम् (तृतीय एवं चतुर्थाध्यायौ) | 4 | 1 | 0 | 5 | 20 | 10 | 70 | 100 |
| 2 | MD-CT-302 | सवात्स्यायनभाष्यम् न्यायदर्शनम् (तृतीयाध्यायः) सप्रशस्तपादभाष्यम् वैशैषिकदर्शनम् (पंचम, षष्ठा एवं सप्तमाध्यायाः) | 4 | 1 | 0 | 5 | 20 | 10 | 70 | 100 |
| 3 | MD-CT-303 | सब्रह्ममुनिभाष्यम् वेदांतदर्शनम् (तृतीयाध्यायः) शाब्दबोधप्रक्रिया | 3 | 1 | 0 | 4 | 20 | 10 | 70 | 100 |
| 4 | MD-CT-304 | सर्वदर्शनसंग्रहः | 3 | 1 | 0 | 4 | 20 | 10 | 70 | 100 |
| 5 | MD-GE*-305<br>MD-GE*-306<br>MD-GE*-307 | भाषा विज्ञान व्याकरणंच<br>Positive Psychology<br>गुप्तकाल का इतिहास–I | 4 | 1 | 0 | 5 | 20 | 10 | 70 | 100 |
| 6 | MD-SEC02*-306<br>MD-SEC02*-307<br>MD-SEC02*-308 | THEORY AND PRACTICAL OF VOCAL<br>THEORY AND PRACTICAL OF INSTRUMENTAL<br>सस्वर वेदपाठः | 1 | 0 | 2 | 2 | | | | |
| | | | | TOTAL | | 25 | | Total | | 500 |

| Semester - IV | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Sl.No. | Course Code | Course Title | Lecture per week | | | Total Credit | Evaluation Scheme | | | Total |
| | | | | | | | Sessional | | External | |
| | | | L | T | P | | CT | TA | SEE | |
| 1 | **MD-CT-401** | सव्यासभाष्ययम् योगदर्शनम् (कैवल्यपादः)<br>सब्रह्ममुनिभाष्यम् सांख्यदर्शनम् (पंचम एवं षष्ठाध्यायौ) | 4 | 1 | 0 | 5 | 20 | 10 | 70 | 100 |
| 2 | **MD-CT-402** | सवात्स्यायनभाष्यम् न्यायदर्शनम् (चतुर्थाध्यायः)<br>सप्रशस्तपादभाष्यम् वैशैषिकदर्शनम् (अष्टम, नवम एवं दशमध्यायाः) | 3 | 1 | 0 | 4 | 20 | 10 | 70 | 100 |
| 3 | **MD-CT-403** | सब्रह्ममुनिभाष्यम् वेदांतदर्शनम् (चतुर्थाध्यायः) अर्थसंग्रहः | 4 | 1 | 0 | 5 | 20 | 10 | 70 | 100 |
| 4 | **MD-CT-404** | समकालीन भारतीय दर्शन | 3 | 1 | 0 | 4 | 20 | 10 | 70 | 100 |
| 5 | **MD-GE*-405**<br>**MD-GE*-406**<br>**MD-GE*-407** | संस्कृत साहित्यम्<br>Counselling Psychology<br>गुप्तकाल का इतिहास–II | 4 | 1 | 0 | 5 | 20 | 10 | 70 | 100 |
| 6 | **MD-AEC02-406** | Research Methodology & Project/Dissertation | 1 | 0 | 2 | 2 | | | | |
| | | | | TOTAL | | 25 | Total | | | 500 |
| | | | | GRAND TOTAL (Credits) | | 94 | GRAND TOTAL (Marks) | | | 1800 |

GE* निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय का चयन करें। कम से कम 15 विद्यार्थियों के समूह बनने पर ही उपरोक्त तीनों विषयों से कोई एक विषय प्रारम्भ किया जायेगा।

| विषय विशेषज्ञ | विषय विशेषज्ञा | विभागाध्यक्षा |
|---|---|---|
| प्रो.श्रीनिवास वरखेड़ी<br>कुलपित केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय<br>नई दिल्ली | प्रो. शिवानी वी.<br>डीन-शास्त्रसंकाय कर्नाटक संस्कृत<br>विश्वविद्यालय, बैंगलुरू | प्रो.साध्वी देवप्रिया<br>दर्शन विभाग<br>पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार |

# पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

## एम.ए. दर्शन

## प्रथम वर्ष (प्रथम सेमेस्टर)

(70+30=100)

**MD-CT-101** –

**वैदिक साहित्यम् एवं सव्यासभाष्ययम् योगदर्शनम् (समाधिपादः) सब्रह्ममुनिभाष्यम् सांख्यदर्शनम् (प्रथमाध्यायः)**

**पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-**

- योग एवं सांख्य के मौलिक सिद्धान्तों से अवगत कराना।
- योग व सांख्य के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ का सुबोध कराना।
- वेद में प्रतिपादित मुख्य सिद्धान्तों से परिचित करवाना।
- वेद व वेद से सम्बन्धित साहित्य का परिचय कराना।

**इकाई प्रथम- वैदिक साहित्य का परिचय–**

**विषय** -

- वैदिक साहित्य का परिचय
- वेदों की रचना - अपौरुषेय या पौरुषेय (तुलनात्मक अध्ययन)
- वेदों में बहुदेवतावाद, एकेश्वरवाद (तुलनात्मक अध्ययन)
- वेद एवं उपनिषदों में सृष्टिरचना विषय।

**निर्धारित पाठ्यपुस्तक-** ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका

प्रकाशक- आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट- 427, गली मन्दिर वाली, नया बांस, दिल्ली-110006

**इकाई द्वितीय- सांख्य दर्शन**-1

सांख्यदर्शन- प्रथम अध्याय (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित)

**विषय-** त्रिविधदुःख, 25 तत्त्वों का निरूपण, ज्ञान प्राप्ति हेतु तीन प्रकार के अधिकारी, प्रत्यक्ष, अनुमान व शब्द प्रमाण का निरूपण, चेतन पर्यन्त भोगप्राप्ति, प्रकृति की परार्थता, शरीरादि से भिन्न पुमान्, पुरुष बहुत्व, अद्वैतवाद का खण्डन, साक्षित्व निरूपण, नित्यमुक्तत्व इत्यादि।

**इकाई तृतीय- योग दर्शन**-1 योगदर्शन - समाधिपाद (व्यासभाष्य सहित)

**विषय-** योग का स्वरूप, पञ्चवृत्तियाँ, द्रष्टा का स्वरूप, अभ्यास-वैराग्य, सम्प्रज्ञात व असम्प्रज्ञात समाधि-ईश्वर प्रणिधान, ईश्वर का स्वरूप, चार प्रकार की भावनाएँ, समापत्ति, अध्यात्मप्रसाद, ऋतम्भरा प्रज्ञा, निर्बीज समाधि ।

**इकाई चतुर्थ- उपर्युक्त ग्रन्थों का स्मरण व लेखन।**

**परिणाम**-1. योग एवं साख्यं के मौलिक सिद्धान्तों का परिचय।
2. योग व सांख्य के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ का गूढ़ परिचय।
3. वेद में प्रतिपादित मुख्य सिद्धान्तों से अवगत।
4. वेद व वेद से सम्बन्धित सहित्यों का विशेष बोध।

**सहायक ग्रन्थ–** भारतीय दर्शन (डॉ० राधा कृष्णन्), भारतीय दर्शन का इतिहास–प्रथम भाग (डॉ० जयदेव वेदालंकार)। सांख्यदर्शन–विद्योदय भाष्य सहित, (आचार्य उदयवीर शास्त्री–प्रकाशक–विजयकुमार हासानन्द– 4408, नई सड़क दिल्ली– 110006), सांख्यदर्शन भाष्य (ब्रह्ममुनि जी), वैदिक दर्शन (बलदेव उपाध्याय), वैदिकमुनि भाष्य, सांख्यदर्शन – (आचार्य आनन्द प्रकाश), भोजवृत्ति – (महाराज भोजदेव)।

**निर्धारित पाठ्यपुस्तक-** सांख्यदर्शन– (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित)प्रकाशन– चौखम्भा प्रकाशन, पोस्ट बाक्स नं.– 1150 के. 37/116, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी–221001, पातञ्जलयोगदर्शनम् (व्यासभाष्यसहित), डॉ. सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव्य शास्त्री चौखम्बा, सुरभारती, वाराणसी।

देवप्रिया

(70+30=100)

**MD-CT-102**

**सवात्स्यायनभाष्यम् न्यायदर्शनम् (प्रथम एवं पंचमाध्यायौ) सप्रशस्तपादभाष्यम् वैशैषिकदर्शनम् (प्रथम एवं द्वितीयाध्यायौ)**

**पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-**

- न्याय व वैशेषिक के सिद्धान्तों का अवबोध कराना।
- न्याय व वैशेषिक के सूत्रार्थ व भाष्यार्थ को सहज रीति से हृदयङ्गम कराना।
- न्याय व वैशेषिक के पदार्थो से अवगत कराना।

**इकाई प्रथम- न्याय दर्शन-1**

**प्रथम अध्याय ( वात्स्यायनभाष्य सहित )**

**विषय** - तर्क पर्यन्त आठ पदार्थों का उद्‌देश्य व लक्षण निरूपण, दोष, प्रवृति प्रेत्यभाव फल दु:ख निरुपण, तत्वज्ञान-स्वरूप निर्देश, शास्त्र की त्रिविध प्रकृति, प्रत्यक्ष अनुमान-उपमान शब्द लक्षण, आत्मानुमापक हेतुओं की व्याख्या, शरीर इन्द्रिय-भूत, अर्थ व बुद्धि का लक्षण व निरूपण, अपवर्ग लक्षण, मोक्ष में नित्यसुख अभिव्यक्ति का पूर्व पक्ष तथा उसका समाधान, दृष्टान्त सिद्धान्त लक्षणनिरूपण, तर्क की तत्वज्ञानार्थता। पञ्चावयव व विभाग निरूपण, वातजल्पवितण्डा, हेत्वाभास निरूपण, छल लक्षण, छल के भेद, जातिनिग्रहस्थान निरूपण ।

**पञ्चमाध्याय ( वात्स्यायनभाष्य सहित )**

**विषय** - 24 प्रकार की जातियों का वर्णन, षट्‌पक्षी निरूपण, 22 निग्रहस्थान के विभाग इत्यादि।

**इकाई द्वितीय- वैशेषिक दर्शन-2**

**प्रथम अध्याय**- धर्म का स्वरूप, द्रव्यादि षट्‌ (द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष समवाय) पदार्थों का तत्वज्ञान नि:श्रेयस का साधन कैसे? गुणों व कर्मों का उद्देश, द्रव्यादि षट्पदार्थों का साधर्म्य-वैधर्म्य से निरूपण, कारण के अभाव से कार्य का अभाव, सत्ता व सत्ता सामान्य का लक्षण, द्रव्यत्व द्रव्य से भिन्न गुणत्व गुणों से भिन्न, कर्मत्व कर्मों से भिन्न है इत्यादि।

**द्वितीयाध्याय**- पृथ्वी, जल, तेज व वायु का लक्षण, आकाश में रूपादि गुण का निषेध, परमाणु नित्यत्व, वायु नानात्व, सृष्टि संहार विधि, आकाश का द्रव्यत्व , एकत्व, नित्यत्व । वस्त्र में पुष्पादिगन्ध औपाधिक, उष्णता-तेज में नैसगर्गिक है, शीतता-जल में नैसगर्गिक है, काल द्रव्यत्व, नित्यत्व, एकत्व, दिशा का लक्षण, नित्यत्व, एकत्व, दिक् प्रकरण, शब्द प्रकरण निरूपण।

**इकाई तृतीय- न्यायसिद्धान्तमुक्तावलि।** (अनुमान खण्ड)।

**विषय**- परामर्श, करण, व्याप्ति, पक्ष व हेत्वाभास आदि।

**इकाई चतुर्थ- उपर्युक्त ग्रन्थों का स्मरण व लेखन।** - 30

**परिणाम**-1. न्याय व वैशेषिक के सिद्धान्तों का बोध।

2. न्याय व वैशेषिक के सूत्रार्थ व भाष्यार्थ को सहजरीतिबद्ध ज्ञान।

3. न्याय व वैशेषिक के पदार्थो का स्वरूपावबोध।

**सहायक ग्रन्थ**- न्यायदर्शन- (विद्योदयभाष्य सहित आचार्य उदयवीर शास्त्री),

**निर्धारित पाठ्यपुस्तक**- न्याय दर्शन (वात्स्यायनभाष्य सहित) प्रकाशन- चौखम्भा संस्कृत भवन, पोस्ट बाक्स नं.- 1160 चौक, चित्रा सिनेमा के सामने (बैंक ऑफ बड़ौदा बिल्डिंग) वाराणसी-221001, वैशेषिक दर्शन (प्रशस्तपादभाष्य सहित)

आनन्द प्रकाश। प्रकाशक- आर्ष शोध, संस्थानम्, आलियाबाद, मं. शमीरपेट, जि.- रंगारेड्डि, तेलंगाना।,
न्यायसिद्धान्तमुक्तावलि-विश्वनाथ पञ्चानन भट्टाचार्यविरचिता प्रकाशक- चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, के. 37/117, गोपालमन्दिर लेन, पो. बा. नं. 1129, वाराणसी-221001

देवप्रिया

(70+30=100)

**MD-CT-103 -**
**सब्रह्ममुनिभाष्यम् वेदांतदर्शनम् (प्रथमाध्यायः) शाबरभाष्यम् मीमांसादर्शनम् (तर्कपादः)**

**पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-**

- वेदान्त के मौलिक सिद्धांतों से परिचय कराना।
- वेदान्त के प्रथम अध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ से अवगत कराना।
- मीमांसा के वास्तविक सिद्धान्तों को तर्कपाद से अवगत कराना।
- मीमांसा के धर्मजिज्ञासा, शब्दनित्यत्वादि प्रमुख सिद्धान्तों से परिचित कराना।

**इकाई प्रथम- वेदान्त दर्शन- 1**

(ब्रह्मसूत्र)- प्रथम अध्याय- प्रथमपाद व द्वितीयपाद

**विषय-** ब्रह्मनिरूपण, जीवात्मा निरूपण, ब्रह्म और जीव में भेद, जगदुत्पत्ति में परमात्मा निमित्त कारण।

**इकाई द्वितीय-** (ब्रह्मसूत्र)- प्रथम अध्याय- तृतीयपाद व चतुर्थपाद

**विषय-** परमात्मा के अधीन प्रकृति उपादान कारण, परमात्मा की विभिन्न नामों से उपासना, उपासना व वेदाध्ययन में सब वर्णो का अधिकार इत्यादि।

**इकाई तृतीय- मीमांसा दर्शन- 1**

मीमांसा दर्शन- प्रथम अध्याय प्रथम पाद (शाबरभाष्य सहित)

**विषय-** मीमांसा शब्द का अर्थ, धर्म का लक्षण, ''चोदनालक्षणोऽर्थः धर्मः'', धर्म, विषयक जिज्ञासा- ''अथातोधर्म जिज्ञासा'', धर्म का प्रमाण-(वेद), देहातिरिक्त आत्मा का अस्तित्व।

**इकाई चतुर्थ- उपर्युक्त ग्रन्थों का स्मरण व लेखन।**

**परिणाम**-1. वेदान्त के मौलिक सिद्धान्तों का विवरण

2. वेदान्त प्रथम अध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ का परिचय।
3. मीमांसा के वास्तविक सिद्धान्तों का तर्कपाद से परिचय।
4. धर्मजिज्ञासा, शब्दनित्यत्वादि प्रमुख सिद्धान्तों का परिचय।

**सहायक ग्रन्थ-** वेदान्त दर्शन- ब्रह्ममुनिभाष्य (विद्योदय भाष्य सहित आचार्य उदयवीर शास्त्री, प्रकाशक-विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली-110006), । शाबरभाष्य व्याख्या -पं. युधिष्ठिर मीमांसक, मीमांसापरिभाषा, अर्थसंग्रह- (लौगाक्षि भास्कर)। **निर्धारित पाठ्यपुस्तक-** वेदान्त दर्शन- ब्रह्ममुनिभाष्य सहित प्रकाशक- माता तुलसादेवी हुकमचन्द्र धर्मार्थ आर्ष साहित्य प्रकाशन, हिसार, (हरियाणा), वेदान्त दर्शन- ब्रह्ममुनिभाष्य सहित प्रकाशक- माता तुलसादेवी हुकमचन्द्र धर्मार्थ आर्ष साहित्य प्रकाशन, हिसार, (हरियाणा)

मीमांसादर्शन (शाबरभाष्य सहित) प्रकाशक- युधिष्ठिर मीमांसक, बहालगढ़, जिला- सोनीपत, हरियाणा।

## MD-CT-104 – सर्वदर्शनसंग्रहः

(70+30=100)

**पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-**

- सर्वदर्शन संग्रह के अन्तर्गत ब्रह्मसूत्र पर आधारित रामानुजाचार्य जी द्वारा स्थापित विशिष्टाद्वैत दर्शन व शंकराचार्य जी द्वारा स्थापित अद्वैतदर्शन के विचारों व सिद्धान्तों का परिचय व अवगाहन।

**माधवाचार्य के सर्वदर्शन संग्रह से चयनित दर्शन।**

**इकाई प्रथम- शंकराचार्य एवं रामानुजाचार्य का ग्रन्थ परिचय।**

**इकाई द्वितीय- शंकराचार्य का अद्वैतदर्शन-** अद्वैतवाद, ब्रह्मविचार, सत्तात्रैविध्य, अध्यास, माया, जीव, विवर्तवाद, अनिर्वचनीय ख्यातिवाद।

**इकाई तृतीय- रामानुजाचार्य का विशिष्टाद्वैतदर्शनम्-** विशिष्टाद्वैतदर्शन में सगुण ब्रह्म, माया का निराकरण, अनुपपत्ति, अपृथकसिद्धि, परिणामवाद, पञ्चीकरण, जीव सम्बन्धी विचार।

**इकाई चतुर्थ-** निम्बार्काचार्य, बल्लभाचार्य के दार्शनिका सिद्धान्तों का सामान्य परिचय।

**परिणाम**-1. शंकराचार्य जी के ग्रन्थों का परिचय।

2. रामनुजाचार्य जी के ग्रन्थों का परिचय।
3. शंकराचार्य के अद्वैतदर्शन का विवरण।
4. रामानुजाचार्य के विशिष्टद्वैतदर्शनम् का परिचय।
5. निम्बार्काचार्य के दार्शनिक मतों का परिचय।
6. बल्लभाचार्य के दार्शनिक मतों का परिचय।

**निर्धारित पाठ्यपुस्तक-** सर्वदर्शन संग्रह (माध्वाचार्य विरचित)।

प्रकाशक-चौखम्बा विद्याभवन, चौक (बैंक ऑफ बड़ौदा भवन के पीछे), वाराणसी-221001

## MD-AEC01*-105- Basic of Computer Application**

### Course Objective:

The course is designed to aim at imparting a basic level appreciation programme for the students. After completing the course, student is able to know foundational knowledge of counputers, their applications, and how to use them effectively in daily life education, and work environments. It helps to use the computer for basic purposes of preparing his personnel/business letters, Ms Office suits, viewing information on Internet (the web), sending mails and other Internet Services etc. This helps the students can easily do our PG dissertation, book writing and other related things in very easy way.

### Module 1: Introduction to Computers (2 Hours)

History of Computer, Types of Computers (Desktop, Laptop, Mobile Devices), Basic Components of a Computer (CPU, Input/Output Devices, Storage), Understanding Hardware vs, Software, Overview of Operating Systems (Windows, MacOS, Linux)

### Module 2: Operation Systems and File Management (3 Hours)

Navigating the Operating System Interface (Desktop, Taskbar, Start Menu, File and Folder Management (Creatin, Renaming, Moving and Deleting), Basics of File Types and Extensions, Installing and Uninstalling Applications, Data Backup and Security.

### Module 3: Productivity Tool (8 Hours)

Concept of font, basic Concept of typing in Hindi, English & Sanskrit language. Touch typing practice through freely available software in English & Hindi.

Word Processing (e.g, Microsoft Word, Google Docs, One Note)-Creating and Editing Documents, Formatting Text and Pages, Adding Tables, Images and Charts Spreadsheets (e.g., Microsoft Exce, Google Sheets)-Creating and Formatting Spereadsheets, Basic Formulas and Function, Charts and Data Visualization.

Presentation Software (e.g Microsoft Powerpoint, Google Slides)-Designing Slideshows, Adding Transitions and Animations, Presenting Effectively.

### Module 4: Internet and Online Tools (4 Hours)

Basics of Networking and the Internet, Browsers and Search Engines (Google, Bing, etc.), Email Basics-G-mail, Microsoft E-mail (Creating Accounts, Sending/Receiving Emails, Attachment, Folder, searching), Online Communication Tools (Zoom, Google meet, Microsoft Teams), Internet Safety and Cybersecurity, Recognizing Scams and Phishing, Safe Online Practices.

**Module 5:Digital Media and E-Learning (6 Hours)**

Basic Image Editing Tools (e.g.,Canva, Photoshop), Video Editing Basics (e.g., Openshot, Windows Video Editor), Introduction to Blogging Platforms and Social-Media, E-Library and other research related website (google scholar, pub-med, sci-hub etc.)

**Module 6:Coding and Emerging Technologies (3 Hour)**

Introuduction to coding (scratch of python Basics), Understading Artificial Itellingence and Maching Learning Basics, Cloud Computing and Storage (e.g., Google Drive, One Drive, Dropbox), Overview of IoT(Internet of Things)

**Moudule 7: Career and Practical Applications (4 Hours)**

Creating a Digital Resume, Job Portals and Online Job Applications, Freelancing Platforms (Upwork, Fifverr), Exploring Certifications (Micorsoft, Google, Coursera), SPSS & G* Power software for Research analytics.

**Resources and Materials:**

I. Software:M.S Office Suite, Freeware alternatives (Google Workspace, Libreoffice).
II. Reference website:Khan Academy, Codecademy, W3Schools.
III. Reference book:Fundamental of Computer (V.Rajaraman B.P.B Publication) course on computer concept (Rahul Aggarwal & Surendra s.Chahar)

# पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

## एम.ए. दर्शन

## प्रथम वर्ष ( द्वितीय सेमेस्टर )

**MD-CT-201 –**
**सव्यासभाष्यम् योगदर्शनम् (साधनपादः) सब्रह्ममुनिभाष्यम् सांख्यदर्शनम् (द्वितीयाध्यायः)**

(70+30=100)

**पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-**

- सांख्य व योग के मौलिक सिद्धांतों का परिचय कराना।
- सांख्य के द्वितीय अध्याय व योग के साधनपाद के सूत्रार्थ व भाष्यार्थ को सहजता से हृदयङ्गम कराना।
- सम्पूर्ण सांख्यकारिका के अर्थ एवं भाष्य को सरलतम विधा से अवगत कराना।

**इकाई प्रथम- सांख्यदर्शन -2**

द्वितीय अध्याय (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित)

**विषय-** बहुश्रुत महिमा, सृष्टि प्रयोजन, महतत्व के लक्षण का कथन, अहंकार लक्षण, अहंकार कार्य, इन्द्रियों के भौतिकत्व का खण्डन, ज्ञानेन्द्रियों व कर्मेन्द्रियों के विषयों का कथन, बुद्धि की प्रधानता।

**इकाई द्वितीय- सांख्यकारिका** - 01 से 72 तक (गौडपाद भाष्य सहित)

**विषय-** सांख्य प्रतिपादित ज्ञान की उपादेयता, प्रमेयभूत 25 तत्वों का परिचय, त्रिविध प्रमाणों का निरुपण, विद्यमान पदार्थ की उपलब्धि व अनुपलब्धि में हेतु, गुणों का स्वरूप निरुपण, पुरुष बहुत्वम्, द्विविधा सृष्टि, बुद्धि का प्राधन्य सूक्ष्म शरीर निरूपण, बुद्धि सर्ग निरूपण, 28 अशक्ति, नवधा तुष्टि व आठ प्रकार की सिद्धियों का वर्णन, पुरुष के मोक्ष के लिए प्रकृति की प्रवृति, तत्वाभास से ज्ञानोदय, सम्यक ज्ञान से मुक्ति।

**इकाई तृतीय- योग दर्शन**

साधनपाद, व्यासभाष्य सहित

**विषय-** क्रियायोग, पञ्च क्लेश, अविधा का स्वरूप, दृश्य व दृष्टा का स्वरूप, हेय-हेयहेतु, हान- हानोपाय, अष्टाङ्ग योग एवं उसका फल, प्राणायाम निरूपण, प्रत्याहार निरूपण इत्यादि।

**इकाई चतुर्थ- उपर्युक्त ग्रन्थों का स्मरण व लेखन।**

**परिणाम**-1. सांख्य व योग के मौलिक सिद्धान्तों का विवरण।
2. सांख्य के द्वितीय अध्याय व योग के साधनपाद के सूत्रार्थ व भाष्यार्थ का ज्ञान।
3. सांख्यकारिका के अर्थ व भाष्य का बोध।

**सहायक ग्रन्थ-** सांख्यदर्शन-विद्योदय भाष्य सहित, (आचार्य उदयवीर शास्त्री-प्रकाशक-विजयकुमार हासानन्द- 4408, नई सड़क दिल्ली- 110006), दयानन्द दर्शन (स्वामी सत्यप्रकाश) अनुवादक रूपचन्द दीपक, सांख्यदर्शनभाष्य (ब्रह्ममुनि जी), वैदिक दर्शन (बलदेव उपाध्याय), वैदिकमुनिभाष्य, सांख्यदर्शन - (आचार्य आनन्दप्रकाश), भोजवृत्ति

– (महाराज भोजदेव)। **निर्धारित पाठ्यपुस्तक-** सांख्यदर्शन (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित) प्रकाशन- चौखम्भा प्रकाशन, पोस्ट बाक्स नं.- 1150 के. 37/116, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी-221001, सांख्यकारिका (गौडपाद भाष्य सहित) प्रकाशक- 41 यू.ए. बंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-110007, अशोक राजपथ, पटना-800004 एवं चौक, वाराणसी-221001,पातञ्जलयोगदर्शनम् (व्यासभाष्यसहित), डॉ. सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव्य शास्त्री चौखम्बा, सुरभारती, वाराणसी।

**MD-CT-202-**

## सवात्स्यायनभाष्यम् न्यायदर्शनम् (द्वितीयाध्यायः) सप्रशस्तपादभाष्यम् वैशैषिकदर्शनम् (तृतीय एवं चतुर्थाध्यायौ)

(70+30=100)

**पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-**

- न्याय व वैशेषिक के मौलिक सिद्धांतों से परिचित कराना।
- न्याय के द्वितीय अध्याय व वैशेषिक के चतुर्थ एवं पञ्चम अध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ को सरलतम रीति से अवबोध कराना।
- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली के कतिपय प्रसङ्गों से अवगत कराना।
- तर्कसंग्रह के कतिपय प्रमुख प्रसङ्गों से परिचय कराना।

**इकाई प्रथम- न्याय दर्शन**

द्वितीय अध्याय- वात्स्यायनभाष्य सहित।

**विषय-** संशय का लक्षण एवं परीक्षा, अनुमान परीक्षा प्रकरण, अर्थवाद, अनुवाद एवं विधिवाक्य निरुपण, प्रमाण चतुष्ट्य की उपपत्ति, व्यक्ति, आकृति, जाति पदार्थवाद का निरूपण इत्यादि।

**इकाई द्वितीय- न्यायसिद्धान्तमुक्तावलि**

शब्दबोध, शक्तिग्रह उपाय अभिधा चतुर्विध शब्दभेद लक्षणा, तात्पर्यज्ञान।

**इकाई तृतीय- वैशेषिक दर्शन-**

तृतीय व चतुर्थ अध्याय- (प्रशस्तपादभाष्य सहित) ।

**विषय-** इन्द्रियों के विषय, ज्ञानादिगुण-भौतिक देह के नहीं, हेत्वाभासों का निर्देश, मन की सिद्धि, आत्मा का लक्षण, आत्मा केवल आगमबोध्य नहीं, आत्मप्रकरण, कारण से कार्य का अनुमान, मूल उपादान को अनित्य कहना अज्ञान है, गुणों का प्रत्यक्ष, गुण वैधर्म्यप्रकरण, रूप, रस गन्ध स्पर्श प्रकरण योनिज व अयोनिज दो प्रकार के शरीर, पृथ्वी के कार्य के भेद ।

इकाई चतुर्थ- **उपर्युक्त ग्रन्थों का स्मरण व लेखन।**

**परिणाम**-1. न्याय व वैशेषिक के मोलिक सिद्धान्तों का विवरण।

2. न्याय के द्वितीय अध्याय व वैशेषिक के चतुर्थ एवं पञ्चम अध्याय का सुविस्तार परिचय।

3. न्यायसिद्धान्तमुक्तावली के कतिपय प्रसङ्गों का ज्ञान।

**सहायक ग्रन्थ**- न्यायदर्शन- (विद्योदयभाष्य सहित आचार्य उदयवीर शास्त्री), न्याय दर्शन (डॉ० राधाकृष्णन्), **निर्धारित पाठ्यपुस्तक-** न्यायदर्शन, वात्स्यायनभाष्य सहित प्रकाशन- चौखम्भा संस्कृत भवन, पोस्ट बाक्स नं.- 1160 चौक, चित्रा सिनेमा के सामने (बैंक ऑफ बड़ौदा बिल्डिंग) वाराणसी-221001, न्यायसिद्धान्तमुक्तावली- पं. विश्वनाथ विरचिताः।

प्रकाशक- चौखम्भा प्रकाशन, पोस्ट बाक्स नं.- 1150, के. 37/116, गोपाल मन्दिर लेन, गोलघर, समीप मैदागिन), वाराणसी-221001, वैशेषिक दर्शन- (प्रशस्तपादभाष्य सहित), आनन्द प्रकाश। प्रकाशक- आर्ष शोध, संस्थानम्, आलियाबाद, मं. शमीरपेट, जि.- रंगारेड्डि, तेलंगाना।

देवप्रिया

(70+30=100)

**MD-CT-203-**
**सब्रह्ममुनिभाष्यम् वेदांतदर्शनम् (द्वितीयाध्यायः) ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका**

**पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-**

- वेदान्तदर्शन के द्वितीय अध्याय के सूत्रार्थ व भाष्यार्थ से अवगत कराना।
- ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका प्रमुख सिद्धान्तों का हृदयङ्गम कराना।
- वेदान्त के मौलिक सिद्धान्तों से इतर सिद्धान्तों का तुलनात्मक परिचय करवाना।

**इकाई प्रथम- वेदान्त दर्शन**

(ब्रह्मसूत्र) द्वितीय अध्याय - प्रथमपाद एवं द्वितीयपाद (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित)

**विषय-** जीवात्मा के कर्म वैचित्र्य से जगत वैचित्र्य, परमात्मा को हस्त आदि करणों की अपेक्षा नहीं, असत्कारणवाद निराकरण, साकार ईश्वरवाद का खण्डन।

**इकाई द्वितीय- वेदान्त दर्शन**

(ब्रह्मसूत्र) द्वितीय अध्याय तृतीयपाद एवं चतुर्थपाद (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित)

**विषय-** भूतों व मन सहित इन्द्रियों की उत्पत्ति व लय का क्रम, जीवात्मा अनुत्पत्तिधर्मत्व, चेतनत्व, अल्पज्ञत्व, अणुत्व, कर्तृत्व भोकतृत्व , शरीर, प्राण व इन्द्रियों का उत्पत्तिकर्त्ता ईश्वर।

**इकाई तृतीय-ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका**

ईश्वर उपासना प्रकरण, वेदानाम नित्यत्व प्रकरण, सृष्टिविद्या प्रकरण, उपासना प्रकरण (द्वितीय), मुक्ति विषय, वर्णाश्रम विषयः संक्षेपतः, पंचमहायज्ञ संक्षेपतः, पठन् पाठन् विषय संक्षेपतः।

इकाई चतुर्थ- **उपर्युक्त ग्रन्थों का स्मरण एवं लेखन।**

**परिणाम-**1. वेदान्तदर्शन के द्वितीय अध्याय के सूत्रार्थ व भाष्यार्थ का ज्ञान।
2. ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के कतिपय प्रमुख सिद्धान्तों का बोध।
3. वेदांत के सिद्धान्तों एवं अन्य सिद्धान्तों का तुलनात्मक ज्ञान।

**निर्धारित पाठ्यपुस्तक-** वेदान्त दर्शन (ब्रह्मसूत्र), (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित)प्रकाशक- माता तुलसादेवी हुकमचन्द्र धर्मार्थ आर्ष साहित्य प्रकाशन, हिसार, (हरियाणा), वेदान्त दर्शन (ब्रह्मसूत्र), (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित) प्रकाशक- माता तुलसादेवी हुकमचन्द्र धर्मार्थ आर्ष साहित्य प्रकाशन, हिसार, (हरियाणा), मीमांसान्यायप्रकाश- आपदेव विरचित न्यायबोधिनीहिन्दीव्याख्या सहित।, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान, पो. बाक्स नं.-1139, के. 37/116, गोपाल मन्दिर लेन (गोलघर समीप मैदाग्नि), वाराणसी-221001, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका लेखक-स्वामी दयानन्द सरस्वती प्रकाश-आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट।

देवप्रिया

(70+30=100)

## MD-CT-204
## पाश्चात्यदर्शनम्

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- ग्रीक दर्शन के विभिन्न सम्प्रदायों का ज्ञान कराना।
- प्रसिद्ध व प्राचीन पाश्चात्य दार्शनिकों के वैचारिक सिद्धान्तों का भेद जानना।
- बुद्धिवादी एवं अनुभववादी चिन्तकों व दार्शनिकों का परिचय व सिद्धान्त बोध कराना।
- पाश्चात्य दर्शन के इतिहास को भलीभांति जानना।

**इकाई प्रथम-**

**ग्रीक एवं मध्ययुगीन दर्शन -**

सुकरात पूर्व दार्शनिक- थेलीज, एनिक्जमेंडर, एनेक्जिमेनीज, पाइथागोरस, हेरेक्लाइटस, पार्मेनाइडीज, सोफिस्ट।

**सुकरात-** दार्शनिक समस्या, दार्शनिक पद्धति, ज्ञान का सिद्धान्त, नैतिक दर्शन।

**प्लेटो-** ज्ञान मीमांसा, प्रत्यय सिद्धान्त, द्वन्द्वात्मक पद्धति, ईश्वरीय विचार, सृष्टि विज्ञान।

**अरस्तु-** विज्ञान और दर्शन, तत्व मीमांसा, द्रव्य एक स्वरूप, कारणता का सिद्धान्त, ईश्वर की धारणा।

**मध्ययुगीन दर्शन-** संत आगस्टिन, संत थॉमस अक्विनस

ईश्वर का विचार, ईश्वर के अस्तित्व के प्रमाण, अशुभ की समस्या, सृष्टि सिद्धांत और ज्ञान मीमांसा

**इकाई द्वितीय- आधुनिक दर्शन ( बुद्धिवाद )**

**रेने देकार्त-** संदेह विधि, द्रव्य विचार, आत्मा का विचार, क्रिया-प्रतिक्रियावाद का सिद्धांत, ईश्वर के अस्तित्व के प्रमाण, जगत की अवधारणा।

**स्पिनोजा-** द्रव्य विचार, गुण प्रर्याय, सर्वेशवरवाद, समानान्तरवाद का सिद्धांत।

**लाइबनित्ज-** चिद्बिन्दुओं का सिद्धान्त, पूर्वस्थापित सामंजस्य का सिद्धांत, ईश्वर का स्वरूप।

**इकाई तृतीय- (अनुभववाद)**

**जॉन लॉक-** जन्मजात प्रत्ययों का खण्डन, द्रव्य विचार, प्राथमिक एवं गौण गुण ज्ञान मीमांसा

**बर्कले-** जड़वाद की आलोचना, आत्मगत प्रत्ययवाद, ज्ञान मीमांसा

**ह्यूम-** द्रव्यविचार, कारण-कार्य सिद्धांत, संशयवाद

**इकाई चतुर्थ-**

**कान्ट- ( समीक्षावाद )**

विश्लेषणात्मक एवं संशलेषणात्मक कथन, पूर्वानुभविक व उत्तरानुभविक निर्णय, शुद्ध बुद्धि की अवधारणा, बुद्धि की कोटिया, देश-काल का विचार, अज्ञेयवाद।

**हेगल**, सत और चित्, ज्ञान की समस्या, अनुभवातीत पद्धति, इन्द्रिय-प्रत्यक्ष का सिद्धान्त, निर्णय की प्रामाणिकता।

**कन्फ्यूशियस का दार्शनिक चिन्तन-** मानवतावाद, ईश्वर की अवधारणा।

**परिणाम-**1. ग्रीक दर्शन के विभिन्न सम्प्रदायों का विवरण।

2. प्रसिद्ध व प्राचीन पाश्चात्य दार्शनिकों के वैचारिक सिद्धान्तों का परिचय।
3. बुद्धिवादी एवं अनुभववादी चिन्तकों व दार्शनिकों का परिचय व सिद्धान्तों का विवरण।
4. पाश्चात्य दर्शन के इतिहास का विवरण।

**निर्धारित पाठ्यपुस्तक-** पाश्चात्य एवं आधुनिक दर्शन का वैज्ञानिक इतिहास-डॉ जगदीश सहाय श्रीवास्तव, प्रकाशन-किताब महल, 22 ए, सरोजिनी नायडु मार्ग, प्रयाग राज।

पाश्चात्य दर्शन- चन्द्रधर शर्मा। प्रकाशक- मोतीलाल, बनारसीदास, 41 यू.ए. बंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली 110007, चौक, वाराणसी, 221001, अशोक राजपथ, पटना- 800004

(70+30=100)

**MD-SEC01-205**

**Communication Technology**

## Objectives

The course helps the participants to,

- Understand the concept and purpose of Communication Technology
- Communicate with email by their own
- Join and organize online academic events
- Search the contents through Google and so
- Access various E-Resources to develop intelligence

| | | |
|---|---|---|
| **Unit I** | Introduction to Communication technology<br>Definition, Types, Purpose and Input methods for Indian Languages/Scripts | (15 hours) |
| **Unit II** | Email Communication<br>Gmail and Zimbra – How to create and use | (4 hours) |
| **Unit III** | Web Conference and Tools<br>Google Meet, Google Classroom, Zoom – including live streaming | (10 hours) |
| **Unit IV** | Internet Search<br>Google, YouTube, Blog | (10 hours) |
| **Unit V** | E-Resources<br>E-Dictionaries, E-Books, E-Learning, Wiki for Indian Languages | (6 hours) |

## Outcomes

After completing the course, the learners will be able to

- Type Indian Script/s by using various Input methods
- Send and arrange emails
- Schedule and/or Join web conferences
- Search the contents through Google and so
- Access various E-Resources

**Reference Book:**

Course on Computer Concepts (CCC), Prof. Satish Jain & M. Geeta, Rapidex Computer Course, Unicorn Books Pvt. Ltd

# पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

## एम.ए. दर्शन

## द्वितीय वर्ष ( तृतीय सेमेस्टर )

(70+30=100)

**MD-CT-301-**
**सव्यासभाष्ययम् योगदर्शनम् (विभूतिपादः) सब्रह्ममुनिभाष्यम् सांख्यदर्शनम् (तृतीय एवं चतुर्थाध्यायौ)**

**पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-**

- सांख्यदर्शन के वैराग्याध्याय व आख्यायिकाध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ का बोध कराना।
- योग दर्शन के विभूतिपाद के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ से अवगत कराना।

**इकाई प्रथम- सांख्य दर्शन-3**

तृतीय अध्याय- (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित)

तत्त्वसमास सूत्र सर्वोपकारिणी वृत्ति सहित (सांख्यसंग्रह ग्रन्थ से)

**विषय-** महाभूत उत्पत्ति, संसारावधि का वर्णन, दो प्रकार के शरीरों का वर्णन, लिङ्ग शरीर व्यापारवर्णन, ज्ञान से मोक्ष प्राप्ति, ज्ञान साधनों का वर्णन, प्रधान सृष्टि का प्रयोजन, पुरुष में बन्धन व मोक्ष का आरोप अवास्तिविक, विवेक से कृत्यकृत्यता इत्यादि।

**इकाई द्वितीय- सांख्य दर्शन-3**

चतुर्थ अध्याय- (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित)

(सांख्यसंग्रह ग्रन्थ से)

**''परिग्रहदुःखे श्येनाख्यायिका''** विवेकासाधनचिन्तने बन्ध इत्यत्र भरताख्यायिका, नैराश्ये सुखमित्यत्र पिङ्गला दृष्टान्तः, अनारम्भे सारादाने च दृष्टान्तः, योगचर्याप्रयोजनवर्णनम्, वैराग्योपायावधारणम् इत्यादि।

**इकाई तृतीय- योग दर्शन-3**

तृतीय पाद (विभूति पाद) व्यासभाष्य सहित।

**विषय-** धारणा, ध्यान, समाधि व संयम का निरूपण, परिणामत्रय का वर्णन, विभूति वर्णन, उदान, समान प्राण पर संयम करने का प्रतिफल, भूतजय एवं इन्द्रियजय से उत्पन्न सिद्धियों का वर्णन, विवेकज्ञान का स्वरूप एवं कैवल्य योग।

**इकाई चतुर्थ- उपर्युक्त ग्रन्थों का स्मरण एवं लेखन।**

**परिणाम-**1. सांख्यदर्शन के वैराग्याध्याय व आख्यायिकाध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ का बोध।
2. योगदर्शन के विभूतिपाद के सूत्रार्थ व भाष्यार्थ का विस्तृत ज्ञान।
3. सांख्यदर्शन व योगदर्शन के सूत्रों का विवरण।

देवप्रिया

**सहायक ग्रन्थ-** सांख्यदर्शन-विद्योदय भाष्य सहित, (आचार्य उदयवीर शास्त्री-प्रकाशक-विजयकुमार हासानन्द- 4408, नई सड़क दिल्ली- 110006), सांख्यदर्शन भाष्य (ब्रह्ममुनि जी), वैदिक दर्शन (बलदेव उपाध्याय), वैदिकमुनिभाष्य,

सांख्यदर्शन - (आचार्य आनन्दप्रकाश), भोजवृत्ति - (महाराज भोजदेव)। **निर्धारित पाठ्यपुस्तक-** सांख्यदर्शन (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित), प्रकाशन- चौखम्भा प्रकाशन, पोस्ट बाक्स नं.- 1150 के. 37/116, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी-221001, सांख्यदर्शन (विज्ञानभिक्षुभाष्य सहित), प्रकाशन- चौखम्भा प्रकाशन, पोस्ट बाक्स नं.- 1150 के. 37/116, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी-221001, पातञ्जलयोगदर्शनम् (व्यासभाष्यसहित), डॉ. सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव्य शास्त्री चौखम्बा, सुरभारती, वाराणसी।

(70+30=100)

## MD-CT-302-
## सवात्स्यायनभाष्यम् न्यायदर्शनम् (तृतीयाध्यायः) सप्रशस्तपादभाष्यम् वैशैषिकदर्शनम् (पंचम, षष्ठा एवं सप्तमाध्यायाः)

**पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-**

- न्यायदर्शन के तृतीय अध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ का बोध कराना।
- वैशेषिक दर्शन के पञ्चम, षष्ठ व सप्तम अध्यायों के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ से अवगत कराना एवं तत्सम्बन्धित प्रशस्तपाद भाष्य का बोध कराना।

**इकाई प्रथम- न्याय दर्शन-3**

तृतीय अध्याय- वात्स्यायनभाष्य सहित

**विषय-** इन्द्रियशरीर आदि से व्यतिरक्त आत्मा का निरूपण, आत्मनित्यत्व परीक्षा, शरीर परीक्षा प्रकरण, इन्द्रिय परीक्षा प्रकरण, अर्थ परीक्षा प्रकरण, मन के अविभुत्व का उपपादन, बुद्धि के आत्मगुणत्व की परीक्षा, आत्मा में इच्छादि गुणों के समवाय का प्रतिपादन, स्मृति के निमित्तों का विवरण, मनः परीक्षा प्रकरण, शरीर की उत्पत्ति में अदृष्ट की कारणता का उपादान।

**इकाई द्वितीय- वैशेषिक दर्शन-3**

पञ्चम अध्याय- (प्रशस्तपादभाष्य सहित)

**विषय-** पृथ्वी के समान जल तेज और वायु में कर्म, सुखादि की उत्पत्ति के कारण, योग का स्वरूप, मोक्ष का स्वरूप, दिक्काल, आकाश, गुण व कर्म में क्रियाहीनता, कर्म पदार्थ निरूपण, समवायी असमवायी कारण ।

**इकाई तृतीय- वैशेषिक दर्शन-3**

षष्ठ व सप्तम अध्याय- (प्रशस्तपादभाष्य सहित)

**षष्ठाध्याय-** वेदों में वाक्य रचना ज्ञानपूर्वक, वेदों में दानक्रिया बुद्धिपूर्वक, निषिद्ध भोजन से वैदिक सत्कर्मों द्वारा भी अभ्युदय नहीं, अन्यों को कष्ट देकर प्राप्त उपभोग दोषपूर्ण, समाज में पारस्परिक सहयोग का आधार, मानव में बुराई भलाई, शुचि और अशुचि का स्वरूप, धर्माधर्म प्रकरण, रागद्वेष का कारण, इच्छाद्वेषप्रयत्न प्रकरण, मोक्ष का उपाय।

**सप्तमाध्याय-** गुण परीक्षा, पाकज प्रकरण, परिमाण परीक्षा, अणुमहत् व्यवहार, परमाणु निरूपण, परिमाण प्रकरण, पृथक्त्व प्रकरण, संख्या प्रकरण, संयोग प्रकरण, विभाग प्रकरण, परत्वापरत्व प्रकरण, समवाय पदार्थ इत्यादि।

**इकाई चतुर्थ- उपर्युक्त ग्रन्थों का स्मरण एवं लेखन।**

**परिणाम-**1. न्यायदर्शन के तृतीय अध्याय का विस्तृत बोध।

2. वैशेषिक दर्शन के पञ्चम, षष्ठ व सप्तम अध्यायों के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ का सम्पूर्ण परिचय।

**सहायक ग्रन्थ-** न्यायदर्शन- (विद्योदयभाष्य सहित आचार्य उदयवीर शास्त्री), न्यायकुसुमांजलि (आचार्य उदयन), न्याय दर्शन (डा० राधाकृष्णन्), न्यायवार्तिक (वाचस्पति मिश्र), ढुण्ढिराजशास्त्री, आनन्दभाष्य सहित (आचार्य आनन्दप्रकाश)। **निर्धारित पाठ्यपुस्तक-** न्यायदर्शन- वात्स्यायनभाष्य सहित, प्रकाशन- चौखम्भा संस्कृत भवन, पोस्ट बाक्स नं.-

1160 चौक, चित्रा सिनेमा के सामने (बैंक ऑफ बड़ौदा बिल्डिंग) वाराणसी-221001, वैशेषिक दर्शन- (प्रशस्तपादभाष्य सहित), आनन्द प्रकाश।, प्रकाशक- आर्ष शोध, संस्थानम्, आलियाबाद, मं. शमीरपेट, जि.- रंगारेड्डि, तेलंगाना।, वैशेषिक दर्शन- (प्रशस्तपादभाष्य सहित), आनन्द प्रकाश। प्रकाशक- आर्ष शोध, संस्थानम्, आलियाबाद, मं. शमीरपेट, जि.- रंगारेड्डि, तेलंगाना।

## MD-CT-303-
## सब्रह्ममुनिभाष्यम् वेदांतदर्शनम् (तृतीयाध्यायः) शाब्दबोधप्रक्रिया

(70+30=100)

**पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-**

- वेदान्त दर्शन के साधन अध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ का बोध कराना।
- शाब्दबोध प्रणाली को अवगत कराना।
- उपरोक्त शास्त्रों के प्रमुख संदर्भों को कंठस्थ कराना।

**इकाई प्रथम- वेदान्त दर्शन-3**

तृतीय अध्याय - प्रथमपाद एवं द्वितीयपाद (ब्रह्ममुनिभाष्यसहित)

**विषय-** सूक्ष्म शरीर के साथ जीवात्मा का प्रयाण एवं पुनर्जन्म वर्णन, जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति अवस्था का वर्णन, योगाभ्यास से परमात्मतत्त्व की प्राप्ति तथा उसके साथ तादात्म्य सम्बन्ध, ब्रह्म के साथ नितान्त अभेद व विशिष्ट अभेद का खण्डन, जीवात्मा के कर्मफल का प्रदाता परमात्मा।

**इकाई द्वितीय- वेदान्त दर्शन-3**

तृतीय अध्याय - तृतीयपाद एवं चतुर्थपाद (ब्रह्ममुनिभाष्यसहित)

**विषय-** सभी उपनिषदों में केवल एक ब्रह्म ही उपास्य है, देवयान मार्ग से मोक्ष प्राप्ति, संन्यास आश्रम ब्रह्म प्राप्ति के लिए, शम, दम आदि साधन के साथ स्वाश्रम कर्मों का अनुष्ठान, संन्याी को अवर आश्रम में लौटने का विकल्प नहीं। मोक्ष प्राप्ति में अनेक जन्मों के प्रतिबन्ध का खण्डन इत्यादि।

**इकाई तृतीय-** शाब्दबोध प्रक्रिया

**विषय-** पिठीकाभागः लक्षण दोषाः पृथ्वीलक्षण शाब्दबोध प्रक्रिया।

इकाई चतुर्थ- **उपर्युक्त ग्रन्थों का स्मरण एवं लेखन।**

**परिणाम**-1. वेदांत दर्शन के साधन अध्याय के सूत्रार्थ एवं भाषार्थ का सम्पूर्ण परिचय।

2. शाब्दबोध प्रणाली का परिचय।
3. वेदान्त दर्शन व मीमांसा न्याय प्रकाश के प्रमुख संदर्भों का परिचयात्मक ज्ञान।

**सहायक ग्रन्थ**- वेदान्त दर्शन- ब्रह्ममुनिभाष्य, विद्योदय भाष्य सहित आचार्य उदयवीर शास्त्री, प्रकाशक-विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली-110006, शाबरभाष्य व्याख्या, -पं. युधिष्ठिर मीमांसक, मीमांसापरिभाषा, अर्थसंग्रह- (लौगाक्षि भास्कर)। **निर्धारित पाठ्यपुस्तक**- वेदान्त दर्शन (ब्रह्मसूत्र), (ब्रह्ममुनिभाष्यसहित) प्रकाशक- माता तुलसादेवी हुकमचन्द्र धर्मार्थ आर्ष साहित्य प्रकाशन, हिसार, (हरियाणा), वेदान्त दर्शन (ब्रह्मसूत्र), (ब्रह्ममुनिभाष्यसहित) प्रकाशक- माता तुलसादेवी हुकमचन्द्र धर्मार्थ आर्ष साहित्य प्रकाशन, हिसार, (हरियाणा), मीमांसान्यायप्रकाश- आपदेव-विरचित न्यायबोधिनी-हिन्दीव्याख्यासहित। प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान, पो. बाक्स नं.-1139, के. 37/116, गोपाल मन्दिर लेन (गोलघर समीप मैदागिन), वाराणसी-221001, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका- महर्षि दयानन्द सरस्वती। तर्क संग्रह -डॉ धनंजय पूर्णप्रज्ञविद्यापीठ बैंगलूरु

(70+30=100)

**MD-CT-304-**
**सर्वदर्शनसंग्रहः**

**पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-**

- सर्वदर्शन संग्रह में उपलब्ध दर्शनों का सम्यक् बोध एवं शैव दर्शन की अपेक्षाकृत कम प्रचलित प्रत्यभिज्ञा दर्शन के विषय में जानना।
- द्वैत दर्शन में सिद्धान्तों का परिचय व स्पष्टता।
- महर्षि पाणिनी विरचित ग्रंथों का महत्व व व्याकरण के प्रयोजन को जानना।

**माधवाचार्य के सर्वदर्शन संग्रह से चयनित दर्शन।**

**इकाई प्रथम- पाणिनीय दर्शन-** व्याकरण शास्त्र का प्रयोजन, अभ्युदय और निःश्रेयस, स्फोटवाद।

**इकाई द्वितीय- मध्वदर्शन (द्वैत दर्शन)-** निर्गुण ब्रह्म व माया का निराकरण, भेद एवं साक्षी, भक्ति।

**इकाई तृतीय- प्रत्यभिज्ञा दर्शन-** शैव दर्शनों का परिचय, मोक्ष, परमशिव की अवधारणा, कश्मीरीय शैव दर्शनों का महत्व त्रिक विद्या।

**इकाई चतुर्थ-** भारतीय दर्शन का इतिहास

**इकाई पञ्चम- उपर्युक्त ग्रन्थों का स्मरण एवं लेखन।**

**परिणाम**-1. सर्वदर्शन संग्रह में उपलब्ध दर्शनों का सम्यक् परिचय।
2. द्वैत दर्शन में सिद्धान्तों का परिचय।
3. महर्षि पाणिनी विरचित ग्रंथों व व्याकरण का परिचय।

**निर्धारित पाठ्यपुस्तक-** सर्वदर्शन संग्रह (माधवाचार्य)।

प्रकाशक-चौखम्बा विद्याभवन, चौक (बैंक ऑफ बड़ौदा भवन के पीछे), वाराणसी-221001

## ( भाषा विज्ञान/Positive Psychology/ गुप्तकाल का इतिहास-1 )

**MD-GE*-305-**
**भाषा विज्ञानं व्याकरणञ्च**

(70+30=100)

**पाठ्यक्रम उद्देश्यः ( Course Objective )**

- अस्य पत्रस्याध्ययनेन छात्रा भाषा विषयकं तुलनात्मकं ज्ञानं प्राप्स्यन्ति।
- भाषा विज्ञानस्य ज्ञानार्थं संस्कृत व्याकरणध्ययनम् आवश्यकं भवति तद् प्रयोजनमपि सेत्स्यति।
- व्याकरणेन सह संगणकस्यापि विशिष्टं महत्त्वमस्ति, तद् ज्ञानमपि प्राप्तुं छात्राः समर्थाः भविष्यन्ति।

**( क ) भाषा विज्ञानम्**

**इकाई प्रथम- भाषा विज्ञानस्य परचियः**

भाषायः परिभाषा, उत्पत्तिः, विकासश्च। भाषापरिवर्तनं तद्भेदाश्च। भाषापरिवर्तनस्य कारणानि। भाषापरिवारः। भारोपीयपरिवारस्य भाषागताः प्रमुखाः शाखाः तद्वैशिष्ट्यानि च। परिवारमूलकम् आकृतिमूलकं च भाषाणां वर्गीकरणम्। संस्कृतभाषा वैदिकी लौकिकी च।

**इकाई द्वितीय- अर्थ विज्ञानम् अर्थ परिवर्तनञ्च** अर्थ विज्ञानम्- अर्थ परिवर्तनस्य कारणानि दिशश्च

**इकाई तृतीय- भाषा विज्ञानेतिहासः** भाषाविज्ञानेतिहासः- प्राचीनः भाषावैज्ञानिकाः पाणिनिः, पतञ्जलिः, भर्तृहरिः, यास्कः, भाषाविज्ञान- व्याकरण- निरूक्तानां परस्पर सम्बन्धः।

**( ख ) व्याकरणम्**

**इकाई चतुर्थ-** सन्धिः, कारकः, समास प्रकरणम्,

**( ग ) संगणक विज्ञानम्**

**इकाई पञ्चम- D.B.M.S., HTML परिचयोऽनुप्रयोगश्च-**
DBMS (Database Management system), Web Technology (HTML), Programming Language (C) म् इत्येषां सामान्यपचियोऽनुप्रयोगश्च।

Digital पुस्तकालयस्य परिचयः, टङ्कणाभ्यासः (यूनिकोडफॉण्ट-माध्यमेन)

**इकाई षष्ठ- प्रयोगात्मक गतिविधियाँ**

**पाठ्यक्रम परिणामः ( Course Outcomes )**

देवप्रिया

अस्य पत्रस्याध्ययनेन छात्रा

- भाषायाः उत्पत्तिं परिवारं निरूपयन्ति।

- भाषा विज्ञानस्य अर्थप्रयोजनपूर्वकं प्राचीनभाषाविज्ञानस्य निरूपणं संस्कृतव्याकरणादिना सह सम्बन्धनिरूपणम् च कुर्वन्ति।
- व्याकरणेन सह संगणकस्यापि विशिष्टं महत्त्वमस्ति तत् परिचयं च कुर्वन्ति।

**संस्तुतग्रन्था:-**

1. भाषाविज्ञानम्- कर्णसिंह:।
2. सामान्य भाषा-विज्ञान-बाबूराम सक्सेना।
3. भाषा और भाषिकी, देवीशंकर द्विवेदी, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़।
4. लघुसिद्धान्तकौमुदी- (वरदराज), भैमीव्याख्या- व्याख्याकार भीमसेन शास्त्री, भैमी प्रकाशन, दिल्ली।

(70+30=100)

## MD-GE*-306-
## Positive Psychology

**Course Objectives:**

- To recognize what contributes/does not contribute to happiness.
- To understand the right kind of vocation relationship and values in life that enhances one's well-being
- To recognize the role of positive emotions and traits in enhancing happiness.

**Course contents**

1. **Introduction: Concept of positive psychology,** historical and philosophical traditions: western influence: Athenian and Judeo-Christian traditions, eastern influences: Confucianism, Taoism, Buddhism and Hinduism
2. **Resilience:** meaning and definition of resilience, the roots of resilience research, resilience recourses, positive youth development, successful aging, strategies for promoting resilience in children and Youth.
3. **Emotional Intelligence**: Salovey & Mayer's ability model of emotional intelligence (E.I), emotion focused coping and adaptive potential of emotional approaches, life enhancement strategies
4. **Self-efficacy:** definition, childhood antecedents, the neurobiology of self efficacy, self-efficacy's influence in life areas.
5. **Optimism:** definition, childhood antecedents of learned optimism, the neurobiology of optimism and pessimism, what learned optimism predicts.

**Course Outcomes:**
**After the completion of this course students will be able to**

- To understand the scientific significance of human qualities.
- To cooperate in the development of ourselves and the society.

**Reference Books:**


1. Snyder, C.R., & Lopez, S.J. (2002) Handbook of positive Psychology. New York: Oxford University.
2. David, S, A., Boniwell, I & Ayers, A.C. (2013) The oxford handbook of happiness. Oxford: Oxford Universi.


**Text Book:**


3. Kumar, V., Archana, & Prakash, V. (2015). Positive Psychology-Application in work, health and well-being. Delhi& Chennai, India:Pearson.

**MD-GE*-307-**

## गुप्तकाल का इतिहास-1

(70+30=100)

**Course Objectives-**

The main objective of this paper is to understand historical processes between 3rd Century AD and 6th Century AD. Though the chronology of the paper starts at 3rd Century AD, an initial background is given starting from thst post Mauryan period starting with the Gupta and ending with post Gupta scenario,

**Unit I: Political History of Gupta Period**

Origin and development of Gupta Dynasty, Early History of Guptas- Shri Gupt and Ghatotkach, Founder of the great Gupta Dynasty- Chandragupta I, Achievements of Samudragupta, Mighty, Virtuous, Digvijayi and the great Gupta king who presented the concept of Greater India.

**Unit II: Political History of Gupta Period**

Achievements Chandrgupta Vikramadity, Kumargupta and his successor- Skandgupta, Budhgupta and Decline of the Imperial Guptas, Government and functions of the Council of Ministers during the Gupta period, Officials of the Gupta empire.

**Unit III: Social status in GuptaPeriod**

Social system - Varna system, institution of marriage, types of marriage, status of women, rights of women in property, widow marriage, clothes and jewellery, clothes of sanyasins, social life, Atithi Satkar, means of entertainment.

**Unit IV: Economic system of Gupta period –**

Development of agriculture, use of new sources of irrigation, development of industries, development of means of transport, banking system, economic standard of living of common people, urban and rural life.

**Unit V: Education system in Gupta period**

Education system, Gurukul education system, Buddhist education system, Centre of Education- Kashi Taxila, Nalanda, Valabhi. Guru-Shishya relationship, curriculum, qualification of the Guru, qualification of the Shishya, rules of admission in Gurukul, women's education, development of writing skills, writing material.

**Course Outcome:**

The paper ensures that the students learn the changes in political, social, economic and cultural scenario happening during this chronological span. It will also teach them how to study sources to the changing historical processes.

**Recommended Readings**:

Pandey, V.C. Prachin Bharat ka Rajnitik Tatha Sanskritik Itihas, 2 Parts, Central Book Dipo Allahabad,

Sharma, L.P.: History of Ancient India,

Raychoudhury, H.C., Prācīn Bhārata Kā Rājanītika Itihāsa (Hindi), Allahabad,

Singh, U., A History of Ancient and Early Medieval India, From The Stone Age To The 12th Century, Delhi 2016

Basham A. L. The Wonder that was India, London

Srivastava, K. C., Prachin Bharat ka Itihas Tatha Sanskriti, Allahabad, 2019

Majumdar, R.C. and A.S. Altekar, The Gupta-Vakataka Age (Also in Hindi), Chapters 1, 11 and 14, London, 1946.

Majumdar, R.C. and A.D. Pusalker (eds.), The History and Culture of the Indian People, Vols. III and IV (relevant chapters), Bombay, 1988 and 1980. Lucknow, 1973.

Ray, H.C., Dynastic History of North India, Delhi, 1960.

Tripathi, R.S., Ancient India (English and Hindi), Delhi, 1960.

Tripathi, R.S., History of Kannauj to the Moslem Conquest, Delhi, 1959.

Upadhyaya, Vasudeo, Gupta Samrajya Ka Itihasa (Hindi), Prayag, 1939.

(70+30=100)

**MD-SEC02*-306**
**THEORY AND PRACTICAL OF VOCAL**

**Objective:-**

**Theory-**

This module is prescribed to appraise to learn the theoretical knowledge of Sangeet its Basic's , Alankaar , Aroh Avroh Pakad, Lakshan geet.

Origin of Music Alankaar according to Bhatkhande swarlipi Paddhati,Bhajan UOP Koolgeet etc.

**Practical-**

Student Can able to practice Khadaj Swar , AUM in proper Musical Way, Twenty Alankaar's, one chota khayal Madhya Laya in Raag – Bhairav.

## THEORY

**UNIT- I Definitions** :- Sangeet, Dhwani , Nada , Swara , Saptak , Alankar, Laya , Sama, Taal , Vadi, Samvadi , Vivadi , Anuvadi, Aroh , Avroh , Pakad, Khayal , Sthai , Antra, Thaat & its Names , Raag, Alaap, Jaati , Bhajan, Lokgeet, Lakshan Geet , Thumri. Brief Parichay of Raag Bhairav.

**UNIT- II** Origin of Sangeet , Origin of Sound, Twenty Alankars According to Kramik Pustak Malika, Swarlipi Paddhati of Vishnu Narayan Bhatkhande & Vishnu Digambar Palushkar , Relation Between Life & Music, UOP (Koolgeet, Yagya Prarthna ) , Five Swastivachan Mantra Two Patriotic Song , Three Arya Samaj Bhajan, Biography of Musician Tansen.

## PRACTICAL

**UNIT- III** - Practice of Twelve Swar in Saptak, Practice of om in Khadaj swar, Twenty Alakaarr according to Kramik pustak Malika-I, Practice of one Chota Khyal in Raag Bhairav in Madhya Laya. Two Taan in Raag Bhairav.

**UNIT-IV-** Practice of Koolgeet, Yagya Prarthna, Five Swastivachan Mantra, Two Patriotic Song, Three Arya Samaj Bhajan with two Sargam each in Related Bhajan, One Hori Song.

**Outcome-**

Got the Knowledge to Sing Basic Swar's , Alankaar's , Bhajan's, Swastivachan Mantra , Patriotic Songs, Raag Bhairav Chhota khayal in a Classical way.

(70+30=100)

**MD-SEC02*-307**
**THEORY AND PRACTICAL OF INSTRUMENTAL**

**Objective-**

This module is prescribed to learn basic Structure of Harmonium, Tabla Some Definitions Related to Swar & Taal.

**Practical :-** Can Able to Practice UOP koolgeet Patriotic Song & Bhajan's On Harmonium .

Can Able to Practice Kayda in Teentaal , Bols in Dadra & Kehrwa.

**UNIT- I-** Harmonium- Structural knowledge of Harmonium, Theoretical knowledge of Twelve Swar in Saptak

**UNIT- II-** Tabla – Structural knowledge of Tabla,

Basic Definitions:- Mantra, Vibhayg, Laya, Sama, Khali, Writing knowledge of Taal:- Dadra, Kehrwa, Teentaal in Thah & Dugun.

## PRACTICAL

**UNIT- III-** Harmonium- Practice of UOP Koolgeet, Yagya Prarthnas, five Swastivachan, One Patiotic song, Three Arya Samaj Bhajan.

**UNIT-IV-** Tabla – Two Kayda in Teental, Practice skill in Dadra and Kehrwa.

**Outcome-**

Got the Knowledge to play Bhajan's, UOP koolgeet , Swastivachan mantra , yagya prarthna on Harmonium.

**Tabla :-** Abled to play kayda in Teentaal , Dadra & kehrwa.

**Recommended Books:-**

1. Sangeet Rachna Ratnakar Part -1 - Rajkishor Prasad Sinha(Author)
2. Raag Parichaya Part -1 – Harishchandra Srivastava(Author)
3. Sangeet prasnottar Part-1
4. Taal Parichaya -1- Acharya Girish Chandra Shrivastava (Author)
5. Adarsh Tabla Prashnotari Part-1- Dr. Rubi Shrivastava
6. Sangeet Praveshika- Acharya Girish Chandra Shrivastava (Author)
7. Kramik Pushtak Mallika Part -1 – V. N. bhatkhande
8. Also Books Recommended by Teacher.

(70+30=100)

**MD-SEC02*-308 –**

**सस्वर वेदपाठः**

उद्देश्य-

- वेदों की रक्षा करना।
- वेद, वेदो का विषय और वेदों के ऋषियों से लाभान्वित् होगें।
- वेद पाठ के हर प्रकार के पाठों से अवगत् कराना।
- अक्षरों(वर्णो) उच्चारण का सम्यक बोध कराना।

ईकाई-१

i. वैदिक वाङ्मय परिचय

ii. वेदो के ऋषियों, छन्द एवं देवताओं के स्वरूप का परिचय।

iii. वेदों के मुख्य विषयों का परिचय।

iv. वेद पाठ के आठ प्रकार के पाठों (जटा, माला, शिखा, रेखा, ध्वजा, दण्ड, रथ, घन)से अवगत कराना।

v. मुख्य सूक्तों का परिचय (अग्नि सूक्त, वायु सूक्त, वागाम्भृणी, बृहस्पति, स्वस्तिवाचन, पुरुषसूक्त, नासदीयसूक्त, शान्तिकरण श्रद्धा, संगठन एवं दिनचर्या मन्त्रों का सस्वर उच्चारण)

ईकाई-२

i. ऋग्वेदीय अग्नि सूक्त, वायु सूक्त, वागाम्भृणी सूक्त कण्ठपाठ अभ्यास एवं अर्थ सहित व्याख्या।

ii. पुराने पाठ का आवृत्ति।

ईकाई-३

i. पुरुष सुक्त नासदीय सूक्त, बृहस्पति सूक्त कण्ठपाठ अभ्यास एवं अर्थ सहित व्याख्या।

ii. पुराने पाठ का आवृत्ति।

ईकाई-४

i. कृष्ण युजर्वेदीय तैत्तीरीय आरण्यक मंत्रपुष्पम् का परिचय।

ii. पुराने पाठ का आवृत्ति।

iii. मन्त्रपुष्पम् का पाठ एवं कण्ठस्थ अर्थ सहित व्याख्या।

**iv.** स्वस्तिवाचन शांतिकरण एवं दिनचर्यामंत्रो का सस्वर उच्चारण।

**v.** संगठन सूक्त के प्रतिदिन एक-एक मंत्र का अर्थ बोध।

**परिणाम-**

- वेद पाठ के प्रकारों (पाठों) का बोध होगा।
- अग्नि,वायु, सस्वर, पाठ एवं अर्थ बोध।
- वैदिक वाङ्मय के विषय मे ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- एकाग्रता बढ़ती है, सात्विक हारमोन्स पैदा होने से अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञान का एवं आनन्दमय अस्तित्व पुष्ट एवं प्रसन्न होता है।

**निर्धारित पाठ्यपुस्तक-** वैदिक सुक्त मञ्जरी, मुद्रक-ऋषि ऑफसैट प्रिन्टर्स, ज्वालापुर हरिद्वार।

देवप्रिया

# पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

## एम.ए. दर्शन

## द्वितीय वर्ष ( चतुर्थ सेमेस्टर )

( 70+30=100 )

**MD-CT-401-**
**सव्यासभाष्ययम् योगदर्शनम् (कैवल्यपादः) सब्रह्ममुनिभाष्यम् सांख्यदर्शनम् (पंचम एवं षष्ठाध्यायौ)**

**पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-**

- सांख्यदर्शन के परपक्षनिर्जयाध्याय व तन्त्राध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ को जानना।
- योगदर्शन के कैवल्यपाद के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ से अवगत कराना।
- उपरोक्तर शास्त्रों के प्रमुख संदर्भों को कण्ठस्थ कराना।

**इकाई प्रथम- सांख्य दर्शन-4**

पञ्चम् अध्याय (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित)

**विषय-** असंग परमेश्वर का अविद्या शक्ति के साथ सम्बन्ध असंभव, धर्माधर्म के प्रमाण का कथन, सुखादि की सिद्धि में अनुमान के पञ्चावयव का प्रयोग, वेदों के पौरुषेयत्व का खण्डन एवं स्वतः प्रामाण्य व्यवस्थापन, स्फोटवाद का खण्डन, आत्मानात्म अभेद में बाधक कथन, आनन्द आत्मा का स्वरूप है इसका खण्डन, परमाणु के नित्यत्व का खण्डन, इन्द्रियों के अभौतिकत्व का व्यवस्थापन, समाधि, सुषुप्ति और मोक्ष की एकरूपता, भूतचैतन्यवाद का खण्डन।

**इकाई द्वितीय- सांख्य दर्शन-4**

षष्ठ अध्याय (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित)

**विषय-** दुःखनिवृत्तिमात्र ही पुरुषार्थ है, बन्ध और मोक्ष के कारण का निरुपण, योग साधना का वर्णन, पुरुष बहुत्व व्यवस्थापन, उपाधि भेद से बन्ध-मोक्ष व्यवस्था का खण्डन, प्रकृति पुरुष का भोग्य भोक्तृभाव का अनादित्व स्थापन ।

**इकाई तृतीय- योग दर्शन-4**

चतुर्थ पाद (कैवल्य पाद) व्यासभाष्य सहित

**विषय-** समाधि के प्रकार, चतुर्विध कर्म, हेतु फल आश्रय के आलम्बन के अभाव से दोषों का अभाव, धर्ममेघ समाधि का स्वरूप, क्लेश कर्म, निवृत्ति व उसका फल, गुणों की परिसमाप्ति, कैवल्य योग ।

**इकाई चतुर्थ- उपर्युक्त ग्रन्थों का स्मरण एवं लेखन।**

देवप्रिया

**परिणाम**-1. सांख्यदर्शन के परपक्ष निर्जयाध्याय व तन्त्राध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ का परिचय।

2. योगदर्शन के कैवल्यपाद के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ का परिचय।

3. सांख्यदर्शन व योगदर्शन के प्रमुख संदर्भों का विवरण।

**सहायक ग्रन्थ**- सांख्यदर्शन-विद्योदय भाष्य सहित, (आचार्य उदयवीर शास्त्री-प्रकाशक-विजयकुमार हासानन्द- 4408, नईसड़क दिल्ली- 110006), दयानन्द दर्शन (स्वामी सत्यप्रकाश) अनुवादक रूपचन्द दीपक, सांख्यदर्शनभाष्य (ब्रह्ममुनि जी), वैदिक दर्शन (बलदेव उपाध्याय), वैदिकमुनिभाष्य, सांख्यदर्शन - (आचार्य आनन्दप्रकाश), भोजवृत्ति - (महाराज भोजदेव)। **निर्धारित पाठ्यपुस्तक**- सांख्यदर्शन (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित) प्रकाशन- चौखम्भा प्रकाशन, पोस्ट बाक्स नं. - 1150 के. 37/116, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी-221001, सांख्यदर्शन (विज्ञानभिक्षुभाष्य सहित) प्रकाशन- चौखम्भा प्रकाशन, पोस्ट बाक्स नं.- 1150 के. 37/116, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी-221001, पातञ्जलयोगदर्शनम् (व्यासभाष्यसहित), डॉ. सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव्य शास्त्री चौखम्बा, सुरभारती, वाराणसी।

(70+30=100)

## MD-CT-402-
## सवात्स्यायनभाष्यम् न्यायदर्शनम् (चतुर्थाध्यायः) सप्रशस्तपादभाष्यम् वैशैषिकदर्शनम् (अष्टम, नवम एवं दशमध्यायाः)

**पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-**

- न्यायदर्शन के चतुर्थ अध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ से अवगत कराना।
- वैशेषिक दर्शन के अष्टम, नवम् तथा दशमाध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ से अवगत कराना, साथ ही तत्सम्बन्धित प्रशस्तपाद का बोध कराना।
- उपरोक्त शास्त्रों के संदर्भों को कण्ठस्थ कराना।

**इकाई प्रथम- न्याय दर्शन - 4**

चतुर्थ अध्याय (वात्स्यायनभाष्य सहित)

**विषय-** प्रकृति, दोष व प्रेत्यभाव परीक्षण, सर्व अनित्यवाद तथा उसका खण्डन, फल परीक्षा प्रकरण, तत्वज्ञानोत्पत्ति प्रकरण, अव्यवी प्रकरण, तत्वज्ञानपरिपालन प्रकरण इत्यादि।

**इकाई द्वितीय- वैशेषिक दर्शन - 4**

अष्टम, नवम व दशम अध्याय- (प्रशस्तपादभाष्य सहित)

**विषय-** आत्मा और मन अप्रत्यक्ष, ज्ञानोत्पत्ति कैसे?, सामान्य विशेष के ज्ञान से द्रव्यादि का ज्ञान, ''अर्थ'' शब्द वाच्य द्रव्य, गुण, कर्म, घ्राण का उपादन पृथ्वी, अभाव का स्वरूप, अभाव का प्रत्यक्ष, लैङ्गिक ज्ञान व शब्द ज्ञान का विवरण, स्मृतिज्ञान के कारण, संस्कार प्रकरण, अविद्या के कारण व उसका स्वरूप, विद्या का स्वरूप, सुख दुःख का विवेचन, ज्ञानादि से अतिरिक्त आत्मगुण हैं, सुख-दुःख प्रकरण, समवायी, असमवायी कारण, दृष्ट-अदृष्ट पदार्थ का ज्ञान एवं प्रयोग, अभ्युदय का प्रयोजक ।

**इकाई तृतीय- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ( प्रत्यक्ष खण्ड )-**

मङ्गलवाद, सप्तपदार्थ, द्रव्यजाति साधन, गुणनिभाग, कर्मविभाग, सामान्य निरूपण, विशेष निरूपण समवाय निरूपण, अभाव निरूपण, कारण निरूपण, अन्यथासिद्ध निरूपण, पृथ्वियादिद्रव्य निरूपण, काल दिक्आत्मनोनिरूपण, प्रत्यक्ष लक्षण।

**इकाई चतुर्थ- उपर्युक्त ग्रन्थों का स्मरण एवं लेखन।**

**परिणाम**-1. न्यायदर्शन के चतुर्थ अध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ का परिचय।
2. वैशेषिक दर्शन के अष्टम, नवम् तथा दशमाध्याय के सूत्रार्थ व भाष्यार्थ का परिचय।
3. वैशेषिक दर्शन के अष्टम्, नवम् तथा दशमाध्याय के प्रशस्तपाद का परिचय।
4. न्यायदर्शन व वैशेषिक दर्शन के प्रमुख संदर्भों का वाचन।

**सहायक ग्रन्थ-** न्यायदर्शन- (विद्योदय भाष्य सहित आचार्य उदयवीर शास्त्री), न्यायकुसुमांजलि (आचार्य उदयन), न्यायदर्शन (डा० राधाकृष्णन्), न्यायवार्तिक (वाचस्पति मिश्र), ढुण्ढिराजशास्त्री। (विद्योदयभाष्य सहित आचार्य उदयवीर शास्त्री), आनन्दभाष्य सहित (आचार्य आनन्दप्रकाश)। **निर्धारित पाठ्यपुस्तक-** वैशेषिक दर्शन- (प्रशस्तपादभाष्य सहित), आनन्द प्रकाश। प्रकाशक- आर्ष शोध, संस्थानम्, आलियाबाद, मं. शमीरपेट, जि.- रंगारेड्डि, तेलंगाना।, न्यायसिद्धान्तमुक्तावली- पं. विश्वनाथ। प्रकाशक- चौखम्भा प्रकाशन, पोस्ट बाक्स नं.- 1150, के. 37/116, गोपाल मन्दिर लेन, गोलघर, समीप मैदागिन), वाराणसी-221001

देवप्रिया

(70+30=100)

## MD-CT-403-
## सब्रह्ममुनिभाष्यम् वेदांतदर्शनम् (चतुर्थाध्यायः) अर्थसंग्रहः

**पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-**

- वेदान्त दर्शन के फलाध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ से अवगत कराना।
- उपरोक्त शास्त्रों के सन्दर्भों को कण्ठस्थ कराना।

**इकाई प्रथम- वेदान्त दर्शन-4**

चतुर्थ अध्याय - प्रथमपाद एवं द्वितीयपाद (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित)

**विषय-** जीवनपर्यन्त एकाग्रतादि साधन के द्वारा परमात्मा का ध्यान, प्रतीक उपासना का निषेध, उपासना से परमात्मा का साक्षात्कार होने पर पापों का असंस्पर्श तथा पुण्यकर्मों का फल।

**इकाई द्वितीय- वेदान्त दर्शन-4**

चतुर्थ अध्याय - तृतीयपाद एवं चतुर्थपाद (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित)

**विषय-** मरण काल में सर्वेन्द्रिय-शक्तियों का सूक्ष्म शरीर में लीन होना, ब्रह्मोपासक योगी का सहस्रार चक्र के माध्यम से उत्क्रान्ति तथा ब्रह्मलोक गमन, देवयान मार्ग से ब्रह्मलोक गमन मुक्ति में सूक्ष्म शरीर का वर्तमानत्व व स्वप्नवत व्यवहार।

**इकाई तृतीय- अर्थ संग्रह**-विधि एवं अर्थवाद, श्रुति, लिंग, वाक्य, प्रकरण, स्थान व समाख्या की समीक्षा। तन्त्र निरूपण, आवाप निरूपण व प्रसंग निरूपण समीक्षा।

**परिणाम**-1. वेदान्त दर्शन के फलाध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ का सम्पूर्ण परिचय।

2. वेदान्त दर्शन व मीमांसा दर्शन के प्रमुख सन्दर्भों का प्रामाणिक ज्ञान।

**सहायक ग्रन्थ-** वेदान्त दर्शन- वैदिकमुनिभाष्य, (विद्योदय भाष्य सहित आचार्य उदयवीर शास्त्री, प्रकाशक-विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली-110006), ब्रह्ममुनिभाष्य, शांकर भाष्य, शाबरभाष्य व्याख्या- पं. युधिष्ठिर मीमांसक, मीमांसापरिभाषा, अर्थसंग्रह- (लौगाक्षि भास्कर)। **निर्धारित पाठ्यपुस्तक-** वेदान्त दर्शन (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित) प्रकाशक- माता तुलसादेवी हुकमचन्द्र धर्मार्थ आर्ष साहित्य प्रकाशन, हिसार, (हरियाणा), वेदान्त दर्शन (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित) प्रकाशक- माता तुलसादेवी हुकमचन्द्र धर्मार्थ आर्ष साहित्य प्रकाशन, हिसार, (हरियाणा), अर्थ संग्रह- श्रीलौगाक्षिभास्कर कामेश्वरनाथ मिश्र, हिन्दी व्याख्याकार चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।

(70+30=100)

## MD-CT-404-
## समकालीन भारतीय दर्शन

**पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-**

- समकालीन भारतीय दार्शनिकों से विद्यार्थियों का परिचय करवाना।
- समकालीन दार्शनकि चिन्तन एवं प्रमुख अवधारणाओं से अवगत कराना।

समकालीन भारतीय दर्शन

**प्रथम ईकाई-**

**स्वामी दयानन्द सरस्वतीः-** जीवन परिचय, ग्रन्थ परिचय, धार्मिक बौद्ध, सामाजिक सुधार, आर्यसमाज के सिद्धान्त, विविध क्षेत्रों में योगदान।

**स्वामी विवेकानन्दः-** जीवन परिचय, सत् एवं ईश्वर, ईश्वर के अस्तित्व की सिद्धि, मानव का स्वरूप, कर्म एवं स्वतन्त्रता, धर्म सम्बन्धित विचार।

**द्वितीय ईकाई-**

**रवीन्द्रनाथ टैगोरः-** सत् एवं ईश्वर की सिद्धि के प्रमाण, आत्मा एवं शरीर, अशुभ की समस्या, मानववाद।

**महात्मा गाँधी-** ईश्वर एवं सत्य, ईश्वर के अस्तित्व के प्रमाण, साध्य-साधन दर्शन, न्यासता का सिद्धान्तः स्वराज की अवधारण, सर्वोदय-स्वेदशी एवं स्वावलम्बन।

**तृतीय ईकाई-**

**श्री अरविन्दः-** शुद्ध सत्, चित्त शक्ति, आनन्द, पुनर्जनम एवं कर्म सिद्धान्त, अज्ञान एवं अज्ञान के सप्तरूप, विविध रूपान्तरण, अति मानव की अवधारणा, पूर्ण अमृैत योग।

**चतुर्थ ईकाई-**

**कृष्णचन्द्र भट्टाचार्यः-** दर्शन की अवधारणा, ज्ञान मीमांसा, निषेध मत।

**राधा कृष्णनः-** परम सत्, आत्म-स्वरूप, धार्मिक अनुभूति, अर्न्तदृष्टि

**परिणामः-**

- विद्यार्थी समकालीन भारतीय दार्शनिकों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेगें जिससे उनके दार्शनिक एवं वैचारिक विकास संभव हो सकेगा।
- विद्यार्थी यह समझने में समर्थ हो सकेंगे कि दार्शनिक विचारधारा किस प्रकार व्यक्तित्व, निर्माण राष्ट्रीय राजनीति एवं सामाजिक संरचना को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

**निर्धारित पाठ्यपुस्तकः-** समकालीन भारतीय दर्शन लेखक-बंसत कुमार लाल प्रकाशक-मोती लाल बनारसीदास 2016।

प्रश्नपत्र-पञ्चम

## ( संस्कृत साहित्य/Counselling Psychology/गुप्तकाल का इतिहास-II )

(70+30=100)

**MD-GE*-405 -**

**संस्कृत साहित्यम्**

**पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-**

- तैत्तिरीयोपनिषद् में वर्णित शिक्षाओं का का विशद् रूप से परिचय कराना।
- ओंकार की महिमा समझाना, पंचकोशों का ज्ञान कराना तथा अन्न की महिमा का बोध, सृष्टि उत्पत्ति का विषय समझाना।
- श्रीमद्भगवद्गीता के गुणत्रय विभागयोग तथा पुरुषोत्तम योग को समझाना।
- मंत्र व श्लोकों का कण्ठस्थीकरण कराना।

**इकाई प्रथम-** तैत्तिरीयोपनिषद्- (शिक्षा वल्ली)- परमेश्वर प्रार्थना, वर्णोच्चारण ऋत, सत्य, अध्यात्म, आधिदैविक पंचक, आधि भौतिक पंचक, विभिन्न लोगों का वर्णन, व प्राप्ति का उपाय, ओकार की महिमा।

**इकाई द्वितीय-** (ब्रह्मानन्दवल्ली)- सृष्टि उत्पत्ति, पंचकोश, सत्-असत्, आनंद की महिमा।

(भृगु वल्ली)- ब्रह्म स्वरूप, अन्न कास महत्व, भार्गवी, वारूणी विद्या का महत्व व फल।

**इकाई तृतीय-** ऐतरेयोपनिषद्- सृष्टि रचना क्रम का वर्णन, गर्भ का वर्णन, वैदिक व लौकि कर्म, परमात्मा के विभिन्न नाम, प्रज्ञान स्वरूप, अमृतत्व।

**इकाई चतुर्थ-** गीता- (चतुर्दशोध्याय (गुणत्रयोविभागयोग)- ज्ञान की महिमा, प्रकृति-पुरुष व जगत उत्पत्ति का वर्णन, सत्, रज, तम, तीनों गुणों का विषय, भगवत् प्राप्ति का मार्ग, गुणातीत पुरुष के लक्षण।

**इकाई पञ्चम-** गीता- पञ्चदशोऽध्याय (पुरुषोत्तमयोग)- संसारवृक्ष का यथार्थ स्वरूप, भगवद् प्राप्ति का उपाय, जीवात्मा का स्वरूप, परमेश्वर का स्वरूप व प्रभाव, क्षर-अक्षर का स्वरूप।

**परिणाम-**

- तैत्तिरीयोपनिषद् में वर्णित शिक्षाओं का का विशद् रूप से अध्ययन।
- ओंकार की महिमा समझाना, पंचकोशों का ज्ञान कराना तथा अन्न की महिमा का बोध, सृष्टि उत्पत्ति का परिचय।
- श्रीमद्भगवद्गीता के गुणत्रय विभागयोग तथा पुरुषोत्तम योग का परिचय।
- मंत्र व श्लोकों का वाचन।

**निर्धारित पाठ्यपुस्तक-** उपनिषद्- एकादशोपनिषद् - डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार,

प्रकाशक- विजयकृष्ण लखनपाल-डब्ल्यू-77 ए, ग्रेटर कैलाश-1, नई दिल्ली-48

**गीता**- श्रीमद्भगवद्गीता गीतामृत- स्वामी रामदेव जी, दिव्य प्रकाशन, पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार

**सहायक ग्रन्थ** - उपनिषद् रहस्य- महात्मा नारायण स्वामीजी, पण्डित भीमसेन शर्मा।

प्रकाशक- श्री घूड़मल प्रहलादकुमार आर्य धर्मार्थ न्यास, हिण्डौन सिटी (राजस्थान)-322230

एवं उपनिषद् संदेश, प्रकाशक-दिव्य प्रकाशन, पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार।

(70+30=100)

## MD-GE*-406 -

## Counselling Psychology

**Objectives:**

- To gain the knowledge about guidance and counseling
- Importance of counseling in real life.

**Course contents:**

**Unit 1 : Counselling Psychology:** Nature of counselling psychology, the Counsellor as a Role Model, The Counsellor's Needs, Emotional Involvement, and Counsellor Limits in Practice and ethical issues in counselling. Difference between counselling and Psychotherapy.

**Unit 2 : Expectations and goals of Counselling:** Goals and expectations, Process, Basic Counselling Skills: Observation Skills, Questioning, Communication Skills (Listening, Feedback, Non-Verbal), Making Notes and Reflections, Role and functions of the counsellors.

**Unit 3 : The Counselling Interview:** History Taking, Interviewing (Characteristics, Types, Techniques), Developing Case Histories: Collecting, Documenting Information, Working with Other Professionals

**Unit 4 : Areas of Counseling:** Educational, Career, Family and Martial, counseling in community centers, counseling in community centers

**Unit 5 :_Ethics in Counselling:** Need for Ethical Standards , Ethical Codes and Guidelines , Rights of Clients , Dimensions of Confidentiality.

**Course Outcomes:**

After the completion of this course students will be able to

- Provide adequate solutions of the problems.
- Assist Clinical Psychologist & Psychiatrists in assessment and treatment.

**Reference Books:**


1. C.J. Gelso and B.R. Fretz (1995). Counseling Psychology. Bangalore: Prism Books Pvt. Ltd.
2. A. David (2004). Guidance and Counseling. New Delhi: Common Wealth Publishers.
3. S. Gladding (2009), Counseling: A Comprehensive Profession, New Delhi: Pearson Eduation.
4. T.S. Sodi and S.P. Suri (2006). Guidance and Counseling. New Delhi: Tata McGraw Hill.
5. S.T. Gladding (2009) Counseling. New Delhi: Dorling Kindersley Pvt. Ltd.


**Text Books :**


6. V.R. Patri (2001): Counseling Psychology, New Delhi: Authors Press.
7. S.N. Rao (2002). Counseling and Guidance, New Delhi : McGraw Hill

Amarnath Rai and Madhu Asthana (2006). Guidance and Counselling. Varanasi: MotilalBanarasidas.

(70+30=100)

## MD-GE*-407 -

## गुप्तकाल का इतिहास-II

**Objective :**

This course introduces the students how India's society, religions and culture undergoes a sea change during the Gupta Period. This course aims to acquainting students with cultural background, development in Languages, Literature and Arts and Architecture in Early India. It makes them clear that Indian culture is an amalgamation of several cultures. Further, it helps to inculcate the social and moral values among the students. The course covers ancient religious architectures- rock cut and structural, temples, sculptures and the literature on painting from different regions of India from the given period. The course aims to introduce the students to ancient India art, related major sites and structures.

**Unit I: Religious Status in the Gupta Period** **(15 Lect.)**

**Vedic Religion-** Surya, Indra, agni, Varun, Yam, Kuber, Tenacity and Sadhana, Life of Tapovan, Origin of Creation, Method of Yagya. public beliefs and rituals. **Puranic Religions**: **Shaivism**: Bhakti Tradition of Shavism: Pashupat Tradition, Kapalik Tradition, Kalmukh Tradition, Skand, Ganesh and Kartikey, Bhakti Tradition, **Vaishnavism:** Panchratr, Bhagavat, Krishna and doctrine of embodiment: Bhagavan Vishnu ke das Avatar, **Shaktism:** Trideviyan-Historical sources of Lakshmi, Durga and Saraswati.

**Unit II: Literary and Creator** **(13 Lect.)**

Development of Sanskrit literature - Fine literature like Avadan, Jataka Mala, Prayag Prashasti composed by Harishena, great poet Kalidas's texts, authors like Bharavi, Bhatti, Shudrak, Visakhadatta, Arthashastra, Dharmashastra, Buddhist literature and Jain literature. Development of Prakrit literature, Apabhramsa literature and Tamil literature.

**Unit III: Development of Art** **(12 Lect.)**

Music and theatre, Amazing development of sculpture- Metal idols, Terracotta, Clay pieces, coins of Gupta rulers, Pots, Architecture- architecture in caves, Buddhist Vihara, Stupas and Pillars, Durg and Raj Prasad, Ordinary Residence, Vapi, Coupe, Tadag etc. various dimensions of painting, Styles of Painting - Ajanta Painting

**Unit IV: Foreign Expansion of Gupta Culture** **(10 Lect.)**

Relations with China-State goodwill, development of printing arts, relations with Afghanistan, contacts with western countries, relations with eastern countries such as Kamboj, Champa, Varma, Java, Sumatra, Bali and relations with Central Asia

**Unit V: Concept of Golden Period** **(10 Lect.)**

**Learning Outcomes:**

After the completion of the course, Students will be able to know about the richness of the Indian culture during the ancient period. They will understand the basic concepts associated with the different aspects of socio- cultural life of the above mentioned period. They will understand the Hindu religious movements, customs, traditions, languages, literature, art and architecture. They get to know how culture of Hindu society influenced that of the other contemporary civilizations.

**Recommended Readings:**


Upadhyay B.S. Gupta Kal Ka Sanskritik Itihas, Hindi Samiti, Lucknow, 1969

Majumdar, R.C. and A.D. Pusalker (eds.), The History and Culture of the Indian People, Vols. II and III (relevant chapters.), Bombay, 1951-57.

Agrawala, P.K., Prācīna Bhāratīya Kalā evam Vāstu (Hindi), Varanasi, 2002.

Agrawala, V.S., Bhāratīya Kalā (Hindi), Varanasi, 1994.

Bajpai, K.D., Bhāratīya Vāstukalā kā Itihāsa (Hindi), Lucknow, 1972.

Brown, P., Indian Architecture (Buddhist and Hindu Periods), Vol. I, Bombay, 1971. . . 34

Coomarswamy, A.K., History of Indian and Indonesian Art, London, 1927.

Gupta, P.L., Bhāratīya Sthāpatya (Hindi), Varanasi, 1970. Roy, N.C., The Rise and Fall of Pataliputra, Kolkata, 2003.

Basham A. L. The Wonder that was India, London.

**MD-AEC02-406**
**Research Methodology & Project/Dissertation**

**Objectives**

- To aware the students about importance of research and to develope various perception and ideas on the relative subject.
- To the students about research and its process to get qulatative research work.
- To aware the students for learning different paramteras for doing research work.

**Unit-I** 15 Hours

- Introduction about laghu sodh lekhan
- References
- Research Journals
- Research Papers (Three research papers are compulsory in journals)
- Seminars (Three seminars presentation are compulsory)

**Unit-II** 15 Hours

- Research Methodology
- Research Objectives
- Research Ethics
- Review

**Outcomes**

- Students will learn the process and method for doing research.
- Students will be able to upgrade their knowledge thourg participating the saminars, workshops and conferences.

**Reference Book**

- Research Methodology & Project/Dissertation Dr.Sadhvi Devpriya (Cheif Editor) Dr.Sanwar Singh Yadav (Editor). Publisher – Divya Prakashan 2025.
- Research Methodology: Ranjeet Kumar Publisher Pearson Education India 2005.

विषय विशेषज्ञ
प्रो.श्रीनिवास वरखेड़ी
कुलपित केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली

विषय विशेषज्ञा
प्रो.शिवानी वी.
डीन-शास्त्रसंकाय कर्नाटक संस्कृत
विश्वविद्यालय, बैंगलुरू

विभागाध्यक्षा
देवप्रिया
प्रो.साध्वी देवप्रिया
दर्शन विभाग
पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार